International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 08-01-2021, Accepted: 24-02-2021, Published: 13-04-2021
Volume 7, Issue 2, 2021, Page No. 69-70

पारधी जनजाति पर आधुनिकता के प्रभावों का अध्ययन

डॉ. प्रविण्यलता मारकण्डेय
शोधार्थी, (समाजशास्त्र), शासकीय विश्वनाथ यादव तामस्कर स्वशासी स्नातकोत्तर महाविद्यालय दुर्ग (छ.ग.) पी.डी.एफ.आई.सी.एस.एस. आर नई दिल्ली, भारत

सारांश
आधुनिकीकरण की अवधारणा द्वितीय विश्वयुध्द के बाद प्रचलन में आयी। यह वह समय था जबकि एशियाई, अफ्रीकी और दक्षिण अमेरिकी देशों ने औपनिवेशिक दासता से मुक्त होकर विकास मार्ग पर बढ़ना शुरू किया था। इन दोनों से मिलकर एक ऐसा क्षेत्र बना जिसे तीसरी दुनिया के नाम से जाना गया। पश्चिमी विद्धानों ने इन उत्तर औपनिवेशिक देशों में हो रहे सामाजिक परिवर्तन का अध्ययन करने के लिए तुलनात्मक परिक्षेप्य का प्रयोग किया। इस परिक्षेप्य में पश्चिम को एक सन्दर्भ प्रारूप के रूप में प्रयुक्त किया गया। 18वीं शताब्दी के अंत के आस–पास औद्योगिक क्रांति और पुनर्जागरण की प्रतिक्रिया के फलस्वरूप पश्चिमी समाज, राजनीति और अर्थव्यवस्था जिस रूप में विकसित हुई उसे ही आधुनिक कहा गया। इसी के सापेक्ष तीसरी दुनिया के देशों को परम्परागत कहा गया। अतः पश्चिमी देशों के प्रभाव के परिणामस्वरूप कम विकसित देशों की सामाजिक संरचना, सांस्कृतिक विश्व दृष्टि तथा आर्थिक व्यवस्था में होने वाले सामाजिक संरचना सांस्कृतिक विश्व दृष्टि तथा आर्थिक व्यवस्थाा में होने वाले परिवर्तन को आधुनिकीकरण के रूप में परिभाषित किया जाता है। 18वीं शताब्दी के उत्तरार्ध्द में पश्चिम में हुए परिवर्तन की तर्ज पर विकासशील देशों में होने वाले परिवर्तन को आधुनिकीकरण कहा गया। जेसिलशापट और जेमिनशाफ्ट अथवा यांत्रिक एकता और सावयती एकता जैसी ध्रुवीय अवधारणाओं का प्रयोग यूरोपीय समाजों में परिवर्तन के प्रतिमान की व्याख्या के लिए किया गया।

मूलशब्दः आर्थिक आधुनिकीकरण से तात्पर्य लाभार्जन, बुध्दिसंगत आर्थिक गतिविधि परिष्कृत तकनीक के बेहिचक प्रयोग, उत्पादन व्यवस्था में अभिनव परिवर्तन लाने हेतु सतत प्रयत्नों के संबंध में दृष्टिकोण परिवर्तन से है।

प्रस्तावना
टालकॉट पारसंस को आधुनिकीकरण को एक व्यवस्थित सिध्दांत प्रस्तुत करने वाला पहला व्यक्ति माना जा सकता है। उनका कहना है कि समाजों को आदिम से आधुनिकी की ओर अग्रसित होने के लिए बहुत से उद्विकासीय सार्वभौम का विद्यमान होना अनिवार्य है। टॉलकॉट पारसंस के अनुसार उद्विकासीय सार्वभौम से तात्पर्य प्रक्रियाओं और संरचनाओं के किसी भी ऐसे संकुल से है, जो रहन–सहन सावयव व्यवस्था की सुदृढ़ अनुकूलन क्षमता में वृध्दि करता हैं निम्न तीन प्रतिमान विकल्प आधुनिकीकरण के मार्ग पर बढ़ रहे किसी समाज के महत्वपूर्ण संकेतक हैं–

1. प्रदत्त प्रस्थिति के स्थान पर अर्जित प्रस्थिति।
2. विशिष्टतावादी मानकों के स्थान पर सार्वभौमिक मानक।
3. भूमिका व्यवस्था के अंतर्गत प्रत्याशा तथा कर्तव्य और अधिक विशिष्ट हो जाते हैं।

डेनियल लर्नर का मत है कि नगरीकरण, आधुनिक शिक्षा, संचार व्यवस्था का विकास तथा आर्थिक विकास को आधुनिकीकरण के प्रमुख लक्षण माना जा सकता है।

आधुनिकीकरण के क्षेत्र
आधुनिकीकरण मुख्य रूप से तीन क्षेत्रों में घटित होता है– आर्थिक सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक व्यवस्था। आर्थिक आधुनिकीकरण से तात्पर्य लाभार्जन, बुध्दिसंगत आर्थिक गतिविधि परिष्कृत तकनीक के बेहिचक प्रयोग, उत्पादन व्यवस्था में अभिनव परिवर्तन लाने हेतु सतत प्रयत्नों के संबंध में दृष्टिकोण परिवर्तन से है। कृषक अर्थव्यवस्था जो मान उपभोग केन्द्रित थी। आज औद्योगिक स्वरूप ले रही है। औद्योगिक अर्थव्यवस्था में ऐसे व्यक्ति होते हैं, जिनका स्वभाव उद्यमिक तथा उपलब्धि आकांक्षा लाभ प्रेरित होती है। ये लोग आर्थिक इकाइयों के प्रति तार्किक और वैज्ञानिक दृष्टिकोण रखते हैं तथा परिष्कृत आधुनिक प्रोद्यौगिकी का अत्यधिक प्रयोग करते हैं। यहां तक कि आधुनिक समाज में इसके अंतर्गत किसान पर्याप्त बुध्दिसंगत ढंग से खेती कर रहे हैं। वे कृषि प्रोद्यौगिकी का इस्तेमाल करते है तथा बाजार की मांग के अनुसार उत्पादन का प्रयास करते हैं। किसान द्वारा की जा रही खेती काफी कुछ वैज्ञानिक ढंग से की जा रही है। पूर्व–आधुनिक अर्थव्यवस्था में कृषि उपभोग केन्द्रित थी तथा खेती करने में परम्परागत तरीकों का प्रयोग होता था।

आर्थिक आधुनिकीकरण
आर्थिक आधुनिकीकरण से तात्पर्य लोगों का लाभप्रद आर्थिक क्रियाओं में लाभ की प्ररेणा से बुध्दिसंगत ढंग से लगे होना है। उद्यमीय वातावरण के विकास, व्यावसायिक गतिशीलता में वृध्दि, प्रौद्योगिकी विकास तथा लोगों में उसे अपनाने की तत्परता के साथ ही आर्थिक आधुनिकीकरण का विकास होता है। अतीत की जीवन निर्वाह स्तर की कृषि अर्थ व्यवस्था, आज औद्यागिक बाजार अर्थव्यवस्था में बदल चुकी है। आधुनिकीकरण के प्रभाव में कृषि ने भी उद्योग की प्रकृति अपना ली है। अपनी खेती से जुड़ी गतिविधियों में किसान भी पूरी तरह से वैज्ञानिक और उद्यमिक हो गया है।

सामाजिक और सांस्कृतिक आधुनिकीकरण
आधुनिकीकरण मुख्य रूप से संस्कृति से जुड़ी प्रक्रिया है जो तार्किक और वैज्ञानिक विश्व दृष्टि तथा नए सामाजिक मूल्य उत्पन्न करती है। इसके कारण सामाजिक आर्थिक और राजनीतिक व्यवस्था में परिवर्तन होता है। आधुनिकीकरण के प्रभाव से परम्परागत भारतीय सामाजिक संरचना तथा दुनिया के ज्यादातर परम्परागत समाजों में विशिष्ट परिवर्तन होते हैं। ये परिवर्तन सत्तावाद से लोकतन्त्र की ओर विशिष्टतावाद से

सार्वभौमिकतावाद की ओर समष्टिवाद की ओर मतान्धता और भावुकता की तार्किकता की ओर, संयुक्त एवं बडे परिवार से नाभिकीय एंव छोटे परिवार की ओर, प्रदत्त प्रस्थिति से अर्जित प्रस्थिति की ओर, असमानता से समानता की ओर, पुरूष सत्तावाद से महिला सशक्तिकरण की ओर हुआ है।

राजनीतिक आधुनिकीकरण

आधुनिक राजनीतिक व्यवस्था, यूरोपीय पुनर्जागरण के बाद का एक बड़ा राजनीतिक परिर्वतन था। पुनर्जागरण के कारण राज्य और चर्च एक–दूसरे से पृथ्क हुए। पूर्व–पूनर्जागरण काल में ये दोनों संयुक्त थे। इस क्रांतिकारी परिर्वतन ने समानता, स्वतंत्रता और लोकतंत्र के सिध्दांतों पर आधारित राजनीतिक व्यवस्था की नींव डाली। राज्य को धर्मनिरपेक्ष तथा चर्चा के नियंत्रण से पूरी तरह स्वतंत्र घोषित किया गया। धर्मनिरपेक्ष राज्य का अर्थ है कि राज्य का अपना कोई धर्म नहीं होगा तथा यह नागरिकों द्वारा किसी धर्म के शांतिपूर्ण पालन की कोई हस्तक्षेप नहीं करेगा। एक धर्मनिरपेक्ष राज्य किसी नागरिक को राजनीतिक लाभ प्राप्त करने के लिए धर्म के दुरूपयोग की अनुमति नहीं देगा।

साहित्य की समीक्षाः फ्युरेर हैमनडार्फ 1988 में जनजातियों में आधुनिकिकरण के प्रभाव का अध्ययन किया है जिसमें जनजाति आधुनिकीकरण कि दिशा में काफी आगे बढ़ गई है । जनजातियां आधुनिक शिक्षा का लाभ उठाकर नौकरियों में जायेंगें में किन्तु इन परिवर्तनों के बावजुद जनजातियां अपनी सांस्कृतिक अस्मिता को सुरक्षित रखने में सफल हुयें है । उनके धार्मिक और सांस्कृतिक जीवन में मामूली परिवर्तन आयें है । परंपरागत धार्मिक रीतिरिवाजों में सर्वाधिक शिक्षित लोग भी पूर्ण आस्था के साथ भाग लेते है उनके विवाह संबंधी नियमों तथा पारिवारिक जीवन में भी बहुत कम परिवर्तन हुये है।

अध्ययन का उद्देश्य

1. पारधी जनजाति पर आधुनिक्ता के प्रभाव का अध्ययन करना

प्रविधि एवं उपकरणः प्राथमिक तथ्यों के संकलन हेतु उपकरण के रूप में साक्षात्कार अनुसूची का प्रयोग किया गया है प्रविधि के रूप में अवलोकन का प्रयोग किया गया है ।

निदर्शनः उत्तरदाताओं के चयन हेतु दैव निदर्शन का प्रयोग किया गया है ।

क्या आप आधुनिकीकरण को समझते हैं

तालिका क्रमांक 1: आधुनिकीकीण को समझना

क्रं	आधुनिकीकरण को समझना	आवृत्ति	प्रतिशत
1	हॉ	172	86.0
2.	नहीं	28	14.0
योग		200	100.00

तालिका 1 से स्पष्ट है कि 86.1 प्रतिशत उत्तरदाता आधुनिकीकरण को समझते हैं जबकि 14 प्रतिशत उत्तरदाता आधुनिकीकरण को नहीं समझते हैं।

तालिका क्रंमाक 2: कृषि कार्य में आधुनिक तकनीकी का प्रयोग

क्रं.	आधुनिक तकनीकी का प्रयोग	आवृत्ति	प्रतिशत
1.	हॉ	200	100
2.	नहीं		
योग		200	100

तालिका क्रमांक 2 से स्पष्ट है कि 100 प्रतिशत उत्तरदाता कृषि कार्य में आधुनिक तकनीकी का प्रयोग करते हैं। आधुनिकी तकनीकी के रूप में धान बुवाई के लिए ट्रैक्टर का प्रयोग करते हैं, धान कटाई के लिए हार्वेस्टर, थ्रेसर का प्रयोग करते हैं।

तार्किकता और वैज्ञानिकता में विश्वास

तालिका क्रमांक 3: तार्किकता और वैज्ञानिकता में विश्वास

क	तार्किकता और वैज्ञानिकता में विश्वास	आवृत्ति	प्रतिशत
1	हॉ	34	17
2.	नहीं	166	83
योग		200	100

तालिका 3 से स्पष्ट है कि 83 प्रतिशत उत्तरदाता तार्किकता और वैज्ञानिक में विश्वास नहीं करते है। जबकि 17 प्रतिशत उत्तरदाता तार्किकता और वैज्ञानिकता में विश्वास करते हैं।

त्यौहार या उत्सव मनाने के तरीके में परिवर्तन

तालिका कंमाक 4: त्यौहार या उत्सव मनाने के तरीके में परिवर्तन

क्रं.	तरीके में परिवर्तन	आवृत्ति	प्रतिशत
1.	हॉ	17	8.5
2.	नहीं	183	91.5
योग		200	100

तालिका 4 से स्पष्ट है कि 91.5 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने त्यौहार या उत्सव मनाने के तरीके में परिवर्तन नहीं हुआ है जबकि 8.5 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने त्यौहार या उत्सव मनाने के तरीके में परिवर्तन होना बताया।

निष्कर्ष

जनजातियां आधुनिकीकरण को समझने लगे है कृषि कार्य में आधुनिक तकनीको का प्रयोग करने लगे है किन्तु तार्किक और वैज्ञानिक दृष्टिकोण से अनभिज्ञ है तथा तीज त्योहार मनाने में किसी प्रकार का परिवर्तन नही हुआ है ।

संदर्भ ग्रथ सुची

1. जी.एस. धुरिय. '' कास्ट एण्ड रोल इन इंडिया''.
2. मजूमदार एवं मदान '' एन इन्ट्रोडक्सन टू सोसीयल एण्ड एन्थ्रोपोलाजी''.
3. के.एल शर्मा . (अप्रेल जून 1968) ''आक्युपेसनल मोबालिटी एण्ड क्लास स्ट्रक्चर मेन इन इंडिया ''वाल्युम नम्बर 48 एन 02.
4. जी.एस धुर्ये (1961) जाति वर्ग और व्यवसाय , राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली.
5. श्यामाचरण दुबे (1960) ''मानव और संस्कृति ,राजकमल प्रकाशन, दिल्ली.
6. दोषी एवं व्यास, राजस्थान की अनुसूचित जनजातिया उदयपुर हिमांशु पब्लिशर्स.
7. आर.ए.पी. सिंह (1999) सामाजिक मानवशास्त्र, रिसर्च पब्लिकेशन्स जयपुर नई दिल्ली.
8. व्यास मान एवं चौधरी , राजस्थान भील्स .
9. मणिक्यलाल वर्मा (1978) ट्राईबल रिसर्च एण्ड ट्रेनिंग इंस्टीट्यूड उदयपुर.
10. पूरण मल यादव (2004), अनुसूचित जनजाति और अत्याचार निवारण यूनिवर्सिटी बुक हाऊस प्रा. लि. जयपुर.